SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

संगीत की उत्पत्ति सम्बन्धी विचारधारायें

DR. PABHAKAR KASHYAP
Assistant Professor (Guest Faculty), Panjab University, Chandigarh

सार
संगीत का संबंध चिन्तन और चेतना दोनों से है। यह चिन्तन संगीत में प्राण फुकता है और चेतना उसे आकार देती है। यही चिन्तन इसकी उत्पत्ति का भी कारण है। विभिन्न मनोवृत्ति के लोगों द्वारा इसे पारिभाषित किया गया। जिस प्रकार हम मानव होमोसेपियन्स का विकास हुआ ठीक उसी प्रकार संगीत की उत्पत्ति भी पर्त दर पर्त हुई।
संकेताक्षर *- संगीत उत्पत्ति, विचारधाराऐं, वाद्य ।*

भूमिका

वर्तमान भारतीय संगीत का जो रूप हमें दिखता है, वह आधुनिक युग की देन नहीं है। मानव के जन्म के साथ उसके भीतर कुछ मनोवृत्तियों ने भी जन्म ले लिया, जैसे भूख लगने पर भोजन की तलाश, प्यास लगने पर जल की खोज, चोट लगने पर पीड़ा और थक जाने पर विश्राम की आवश्यकता को उसने सहज ही महसूस किया होगा। मानव की इन्हीं मनोवृत्तियों ने उसे सदैव कुछ नया करने हेतु प्रेरित भी किया होगा। भूख लगने पर भोजन की तलाश करता होगा और जब उसे भोजन मिल जाता तो प्रसन्नचित्त होकर उछलने-कूदने लगता होगा, साथ उसके मुख से निरर्थक शब्द अनायास ही निकल पड़े होंगे और वह उछलता चिल्लाता हुआ किसी वस्तु पर अपने हाथों से प्रहार करता रहा होगा। ये सभी क्रियायें के उसकी प्रसन्नचित्त मनोवृत्ति को प्रदर्शित कर रही हैं। यही प्रक्रिया वह दोहराता रहा होगा और जिसने धीरे-धीरे एक स्वरूप धारण किया। संभवतः यही संगीत का प्रारंभ माना जा सकता है। यह मात्र एक अनुमान है किन्तु इन बातों का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है, क्योंकि कथ्य को प्रमाणित मात्र तथ्यों के आधार पर ही किया जा सकता है। अतः उक्त कल्पना का कोई आधार नहीं है। इसकी शास्त्रगत् व्याख्या ही इसे पूर्ण रूप से प्रमाणित करने में समक्ष होती है।

संगीत मानवीय लय एवं तालबद्ध अभिव्यक्ति है, जिसे मधुरता और विविधता के लिए जाना जाता है। विद्वानों ने मनुष्य की मनोवृत्तियों को शास्त्रगत् आधार प्रदान कर उसे एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया। वैदिक काल से ही संगीत प्रारंभ हो चुका था। मनुष्य द्वारा ईश्वर की आराधना हेतु भजनों के प्रयोग की परम्परा रही है, अर्थात् कला पूर्णतः धर्म से प्रभावित थी। यदि यह कहा जाए धर्म से ही संगीत की उत्पत्ति हुई है तो सर्वथा गलत नहीं होगा, क्योंकि धर्म के अनुकरण एवं ईश्वरीय भक्ति में संगीत एक सशक्त माध्यम रही है, किन्तु धीरे-धीरे यह धर्म के बंधन से मुक्त होकर लौकिक जीवन से जुड़ गई, और इसी के साथ संगीत आज वृहद रूप में हमारे समक्ष है। समय के साथ-साथ संगीत महान विभूतियों के योगदान और समर्पण के कारण अपने तीनों रूपों गायन, वादन तथा नृत्य के साथ अपने चरम पर है।

चूँकि हम संगीत को शास्त्रों से जोड़कर देखते हैं अतः इसकी शास्त्रगत् परिभाषा आवश्यक हो जाती है। "संगीत" शब्द 'गीत' शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाकर बना है। 'सम्' अर्थात् 'सहित' और 'गीत' का तात्पर्य 'गान' से है। इस प्रकार 'गान के सहित' अर्थात् अंगभूत क्रियाओं (नृत्य) व वादन के साथ किया हुआ कार्य 'संगीत' कहलाता है।

नृत्तं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ति च। अतो गीतं प्रधानत्वादत्रादाभिधीयते।।
(संगीत रत्नाकर,1/24-25) संगीत की सामान्य जानकारी

सभी ललित कलाओं में 'संगीत' का एक विशिष्ट स्थान है तथा यह कला इनमें अग्रण्य रही है। आचार्य वात्सायन ने भी काम की चैंसठ उपायगत् कलाओं में सर्वप्रथम जिन तीन को परिगणित किया है वे गीत, वाद्य और नृत्य हैं।

यदि भाषागत् अर्थ की बात करें तो स्पष्ट होता है कि संगीत शब्द सम$गीत इस प्रकार बना है, जिसका अर्थ होता है- सम्यक् प्रकार से गाया गया गीत। सम्यक् का अर्थ ही समान या बराबर भी होता है, अर्थात् समान, बराबर या ठीक प्रकार से गाया गया गीत 'संगीत' होता है। यहाँ समान, बराबर या ठीक का अभिप्राय गीत का स्वर, ताल एवं लय इत्यादि की दृष्टि से ठीक अथवा बराबर होना है। संगीत का मुख्य उपादान

'नाद' होता है एवं नाद के माध्यम से ही संगीत कला की उत्पत्ति, अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुति संभव हो सकती है। नाद का साधारण अर्थ संगीतोपयोगी एवं रंजक ध्वनि से होता है, परंतु वास्तव में केवल नाद से ही संगीत की उत्पत्ति नहीं हो जाती, अपितु जब विभिन्न नाद या रंजक ध्वनि एवं इनके समुहों को विभिन्न एवं आकार-प्रकार देकर विशिष्ट प्रकार से क्रमबद्ध रूप में सुसम्बद्ध एवं सुनियोजित करके इनका कलात्मक तरीके से प्रस्तुतिकरण किया जाता है तो संगीत की उत्पत्ति या अभिव्यक्ति होती है। संगीत कला की तीन प्रमुख शाखायें होती हैं- गायन, वादन और नर्तन।

गायन

गायन में जिव्हा (जीभ) एवं कण्ठ के माध्यम से विभिन्न प्रकार के अलंकारिक नाद स्वरोच्चारण एवं शब्दोच्चारण के द्वारा भावाभिव्यक्ति की जाती है। इसे रंजक बनाने के लिए यथा संभव विभिन्न वाद्यों की भी सहायता ली जाती है। हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक दोनों प्रकार की संगीत पद्धतियों में गायन के अंतर्गत अनके प्रकार की शैलियों का समताप रहता है। हिन्दुस्तानी गायन संगीत पद्धति के अंतर्गत धुरपद, धमार, ख्याल आदि उपशास्त्रीय गायन के अंतर्गत ठुमरी, टप्पा, चैती, कजरी आदि एवं सुगम संगीत की गायन शैली के अंतर्गत ग़ज़ल, भजन, गीत आदि आते हैं। वादन में विभिन्न वाद्यों की सहायता से विभिन्न प्रकार के रंजक, नाद, स्वर एवं वर्णों (पटाक्षरों) के द्वारा भावाभिव्यक्ति या अभिव्यंजना की जाती है। वाद्यों के अंतर्गत चार प्रकार के वाद्य आते हैं। हिन्दुस्तानी हो या कर्नाटक, दोनों संगीत पद्धतियों में निम्न चार प्रकार के वाद्यों का प्रयोग होता है-

1. तत्वाद्य - तत्वाद्य के संदर्भ में आचार्य भरत का मत है- "ततं तंत्री कुतं", अर्थात् तत् वाद्य तंत्री वाद्य से बनें होते हैं। उदाहरण - सरोद, सितार, रूद्र वीणा, इसराज, दिलरूबा, सारंगी, संतूर, क़ानून, मिडां◌ लियन, वायलिन आदि।

2. अवनद्ध वाद्य - इनके के संदर्भ में आचार्य भरत का मंतव्य है- "सेवनद्धंदु पौष्करम", अर्थात् वे वाद्य जो अवनद्ध या मढ़े हुए होते हैं उन्हें पुष्कर या अवनद्ध वाद्य कहा जाता है। मूल रूप से वे वाद्य जो अंदर से खोखले होते हैं और जिन पर चर्म आदि मढ़ा होता है एवं यही आवरण ध्वनि उत्पत्ति का मूल हेतु होता है वही अवनद्ध वाद्य कहलाते हैं। उदाहरण - तबला, पखावज, मृदंगम्, ढोलक, खोल, नाल, मांदल आदि।

3. घनवाद्य - घनवाद्य वे होते हैं, जा ◌ ठोस वस्तुओं जैसे हड्डी, लकड़ी, पत्थर, लौह, पीतल आदि से बनाये जाते हैं। इन्हें आपस में टकराकर या झुनझुनाकर बजाया जाता है। उदाहरण - झाँझ, मंजीरा, कठताल, जयघण्टा, गाँग, गेमलन आदि।

4. सुषिर वाद्य - आचार्य भरत ने सुषिर या छिद्रयुक्त वाद्यों को 'वंश' कहा है। वास्तव में वे वाद्य जो छिद्र युक्त होते हैं एवं जिनमें ध्वनि की उत्पत्ति वायु में उत्पन्न कम्पनों के फलस्वरूप होता है वे सुषिर वाद्य कहलाते हैं। उदाहरण - बाँसुरी, शहनाई, शंख आदि।

उद्भव एवं विकास

भारतीय संगीत का उद्भव कब हुआ? कैसे हुआ? किसके द्वारा हुआ? कहाँ हुआ? विभिन्न अध्ययनों एवं शोधों के फलस्वरूप भी इन प्रश्नों का सही उत्तर देना संभव नहीं हो पाया है। हम यह भली-भाँति जानते हैं एवं प्रत्यक्ष भी है कि आज संगीत से कोई देश, कोई जाति, कोई सभ्यता, यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी बाहर नहीं हैं। यह सभी किसी-न-किसी रूप में संगीत स ◌ अवश्य प्रभावित होते हैं। हजारों वर्षों से मानव और संगीत का अटूट संबंध चला आ रहा है। वास्तव में किसी भी कला की उत्पत्ति एवं विकास एक दिन में या एक व्यक्ति द्वारा नहीं होती है, तो संगीत की उत्पत्ति कैसे हो सकती है? तात्पर्य यह है कि संगीत का जो विकसित रूप हमारे सामने है वह कई आयामों से गुजरा है। इसे वर्तमान रूप प्राप्त करने में कई सदियाँ लगी हैं जिसमें अनेक विद्वानों का योगदान रहा है। संगीत के उद्भव के संदर्भ में अनेक विद्वानों के विभिन्न मत प्राप्त होते हैं, जैसे धार्मिक विचारधारा, बौद्धिक विचारधारा, वैज्ञानिक विचारधारा, पाश्चात्य विचारधारा।

धार्मिक विचारधारा

धार्मिक विचारधारा से आशय संगीत उत्पत्ति से सबंधित ऐसी धारणाओं एवं मान्यताओं से है जो धर्म या धार्मिक दृष्टिकोणों से जुड़ी हुई है। इनमें संगीतोत्पत्ति की व्याख्या धार्मिक दृष्टिकोण से की जाती है। इस विचारधारा में ही कई मत हैं, जैसे-

(क) वैदिक मत - इस मत के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों से हुई है। वेदों को सर्वथा सुर में पाठ करने की प्रथा थी। लौकिक स्वरों का विकास वैदिक स्वरों से माना जाता है। वैदिक काल में मूलतः तीन ही स्वर थे- उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। इसका प्रमाण हमें पाणिनीय शिक्षा से मिलता है-

"उदात्रेनिषादगान्धाराबानुदात्तऋषभ धैवतौ। स्वरितः प्रभवा ह्येतो षड्जमध्यमपंचमाः।।"

अर्थात् उदात्त में नि एवं ग, अनुदात्त (मन्द्र) में रे एवं ध तथा स्वरित (मध्य) में सा, म एवं प स्वर होते हैं। वैदिक स्वरो को क्रमशः क्रुष्ट प्रथम, द्वितीय, ततीय, चतुर्थ, मन्द्र व अतिस्वार्य कहा जाता है। डॉ. जोगिन्द्र सिंह बाबरा भी इस मत का समर्थन करते दिखाई देते हैं कि संगीत की उत्पत्ति वेदों से हुई।

(ख) दैवीय मत - दैवीय मत से आशय धार्मिक विचारधारा के उन मतों से है जिनमें भारतीय संगीत के उत्पत्तिकत्ता या जनक विभिन्न देवी-दवे ता माने जाते हैं, जैसे- ब्रह्मा, सरस्वती, शिव, गणेश आदि।

ब्रह्मा को इसका उत्पत्तिकत्ता बताते हुए एक श्रुति के अनुसार वेदों के रचियता ब्रह्माजी इस विद्या के धारिणी थे, उन्होंने यह विद्या शिव को और शिव द्वारा सरस्वती को, और सरस्वती से नारद को प्राप्त हुई। नारद जी ने स्वर्ग में देव, गंधर्व, किन्नर, अप्सराओं को यह विद्या प्रदान की। एक अन्य मत के अनुसार- नादर जी ने कई वर्ष योग साधना की और महादेव जी ने उनकी भक्ति पर प्रसन्न होकर संगीत विद्या प्रदान की। नारदजी ने इसका भू-लोक में प्रचार किया। पार्वती जी की शयन मुद्रा देखकर महादेव जी ने उनके अंगों-प्रत्यंगों के आधार पर 'रूद्रवीणा' बनाई और अपने पांच मुखों से पांच रागों भैरव, हिण्डाले , मेघ, दीपक और श्री को उत्पन्न तथा कौशिक राग पार्वतीजी द्वारा उत्पन्न किया गया।[2]

फ़ारसी की एक कथा के अनुसार- हज़रत मूसा पहाड़ों पर घूमते-फिरते कुदरत के नज़ारे देख रहे थे। आकाशवाणी मिली- 'या मूसा हक़ीक़ी तू अपना कामा इस पत्थर पर मार', हज़रत मूसा ने वैसा ही किया, वैसा करने पर पत्थर के सात टुकड़े हो गये और प्रत्येक टुकड़े से जलधारा बहने लगी। सात जलधाराओं से सात भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न हुईं, जो सा रे ग म प ध नि कहलाई। इससे कुछ भिन्न एक अन्य फ़ारसी कथा के अनुसार- हज़रत मूसा दरिया में नाव की सैर कर रहे थे, उन्हें एक पत्थर दिखाई दिया और एक फरिश्ता जिसका नाम जेबरायुल था उनके सामने प्रकट हुआ और बोला 'इस पत्थर को तुम सदा अपने पास रखना', एक दिन वह जंगल में घूम रहे थे, उन्हें प्यास लगी। जंगल में पानी नहीं मिला तो उन्होंने ख़ुदाबंद करीम से प्रार्थना की, बस फिर क्या था वर्षा होने लगी। मूसा पैग़म्बर ने अपनी प्यास बुझाई। वर्षा के जल की धारा उस पत्थर पर भी पड़ी और पत्थर के सात भाग हो गये। इन सात टुकड़ों से जल की धारायें बहने लगीं। इनके अलग-अलग सात ध्वनियाँ उत्पन्न होने लगीं, सात स्वरों अर्थात् सा रे ग म प ध नि के नाम से प्रसिद्ध हुईं।[3] नाट्यशास्त्र के रचियता महर्षि भरत ने नाट्य का प्रारंभ ब्रह्मा जी से ही माना है। भारतीय जनश्रुति के अनुसार वैवसृव में मन्वन्तर में त्रेता युग लगने पर इन्द्र इत्यादि देवताओं ने भगवान ब्रह्मा से प्रार्थना की, कि हम दृश्य क्रीडनीय देखना चाहते हैं।[4] भगवान ब्रह्मा ने ऋग्वेद से पाठ, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय एवं अथर्ववेद से रस लेकर 'नाट्यवेद' की सृष्टि की। नाट्यवेद की ग्रहण, धारण, ज्ञान व प्रयोग में देवता असमर्थ थे, फलतः इन्द्र की प्रार्थना पर भगवान ब्रह्मा ने महामुनि ब्रह्मा को नाट्य की शिक्षा दी। भरत ने नाट्यवेद की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् अपने पुत्रों को भी शिक्षित किया। भगवान ब्रह्मा ने स्वाति और इनके शिष्यों को वाद्य तथा नारद एवं गंधर्वों आदि को गान गेय में नियोजित किया। इन सभी के पश्चात् 'अमृत मंथन' (नाट्य) का प्रयोग हुआ। इस प्रयोग से समस्त देव-दानव प्रसन्न हुए। गीत इस प्रयोग की शैय्या (आधार) थी। गीत का संभवतः यह प्रथम प्रयोग था, क्योंकि गीत और वाद्य के भली-भाँति प्रयोग होने पर नाट्य प्रयोग में विपत्ति (असफलता) नहीं आती। अमृत मंथन को सफल देखकर भगवान (भरत) ने नाट्य प्रयोग शंकर को दिखाना चाहा और भगवान शंकर के निवास स्थान पर गये। उनकी स्वीकृति मिलने पर ब्रह्मा की आज्ञा से महर्षि ने 'त्रिपुरदाह' (नाट्य) का प्रयोग किया। इस प्रयोग से भगवान शंकर प्रसन्न हुए और बोले- मैंने भी प्रतिदिन संध्याकाल नृत्य करते हुए 'नृत्य' का अविर्भाव किया है, जो विभिन्न करणों एवं अंगहारों से विभूषित है, आप इसकी योजना पूर्वरंग विधि में कीजिए। इससे स्पष्ट होता है कि नाट्य प्रादुर्भाव के साथ ही गान, वादन एवं नृत्य स्वतंत्र रूप से विकसित हो चुके थे। शिव पुराण के अनुसार - नारद जी ने अनेक वर्षों तक योग साधना की तब शंकर जी ने उन पर प्रसन्न होकर संगीत कला प्रदान की।

'शिव प्रदोष' स्रोत के अनुसार- तीन जगत की जननी गौरी को सिंहासन पर बिठा का प्रदोष के समय शलू पाणी शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सभी देवता उनको देखकर खड़े हो गये और उनकी स्तुति गान करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इन्द्र ने वेणु, ब्रह्मा ने करताल बजाना आरंभ किया। लक्ष्मी ने गाना गाया तथा भगवान विष्णु मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीत उत्सव को देखने के लिए गंधर्व, यक्ष, पतंग पूरण, सिद्ध साध्य, विद्याधर, देवता, अप्सरायें आदि उपस्थित थे।[5] ओम- शब्द से संगीत की उत्पत्ति : कुछ विद्वानों का मानना है कि संगीत का जन्म 'ओम' शब्द के गर्भ से हुआ है। आमे शब्द एकाक्षर होकर भी अ, उ, म इन तीन ध्वनियों से निर्मित हुआ है। तीनों अक्षरों के संयागे से इसकी ध्वनि एक की अक्षर के समान होती है, इसलिए इसे एकाक्षर कहा जाता है। ओम के तीनों अक्षर अ, उ और म तीन शक्तियों के द्योतक हैं। 'अ' उत्पत्ति शक्ति सृष्टिकत्र्ता ब्रह्मा, 'उ' धारक पालन रक्षण अर्थात् स्थिति शक्ति का प्रतीक विष्णु, 'म' महेश शक्ति का द्योतक है। तीनों शक्तियों का पुंज ही त्रिमूर्ति परमेश्वर है। ओम वेद का बीज मंत्र है। इसके विषय में भानू कहते हैं, ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद से अ, उ, म ये तीन अक्षर लेकर प्रणव 'ओम' बना है।[6]

'संगीत मकरंद' के रचयिता नारद में भी संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा से मानी है, किन्तु संगीत रत्नाकर के रचनाकार शारंगदेव ने संगीतोत्पत्ति सदाशिव से मानी है।[7] पशु-पक्षियों से संगीत की उत्पत्ति - कई लोगों का मानना है कि काहे काक में एक पक्षी है जिसे फ़ारसी भाषा में 'अतिशज़न' कहते हैं। इस पक्षी की चोंच के सात छिद्रों से सात प्रकार के स्वर निकलते हैं, जिन्हें बाद में मुख्य स्वर स्वीकार किया गया। पं. चतुर दामोदर के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'संगीत दर्पणम्' के अनुसार- संगीत के मुख्य सात स्वरों की उत्पत्ति विभिन्न पशु-पक्षियों से हुई है, जैसे-

"षड्जं वदति मयूरः पुनः स्वरमृषभं चाटकोब्रूते। गान्धारव्यं छागो निगदति च मध्यमं क्रौचः।।
गदति पचममचितवाक् पिको रतति धैवतमुन्मददर्दुरः। शृणिसमाहतमस्तककुजरो गदति नासिकया स्तरमन्तिगम्।।" [8]

अर्थात् मयूर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरे से गंधार, क्रौंच पक्षी से मध्यम, कोयल से पंचम्, मेंढक से धैवत और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति होती है।

बौद्धिक विचारधारा

बौद्धिक विचारधारा के अंतर्गत संगीतोत्पत्ति पर हम तीन दृश्यों से विचार कर सकते हैं-

1. भौतिक - भौतिक शास्त्र के विद्वान के अनुसार- ध्वनि दो प्रकार होती हैं- (1) संगीतोपयोगी ध्वनि जिसे हम 'नाद' कहते हैं। (2) संगीतोत्तर ध्वनि, जिसे हम 'राव' कहते हैं। सभी प्रकार की ध्वनि द्रव्य के कम्पन से होती है, चाहे वह नाद हो, या राव हो। अंतर यह है कि राव के उत्पादन का कम्पन क्षणिक और अनियमित होता है, किन्तु नाद के उत्पादक का कम्पन नियमित और सबल होता है।

2. अतिभौतिक - दार्शनिकों ने नाद के चार भेद माने हैं- परा, पश्यन्ति, मध्यमा, वैश्वरी। इसमें से मध्यमा को संगीतोपयोगी नाद अर्थात् स्वर का आधार माना गया है। मध्यमा द्वारा नियमित नाद स्वर में प्रस्फुटित हो उठता है। यह संगीतोपयोगी नाद का अतिभौतिक स्वरूप हो सकता है।

3. मानसिक या मनोवैज्ञानिक - इस दृष्टि से आधुनिक विद्वानों ने संगीत के उद्भव पर पर्याप्त विचार किया है। डार्विन का कहना है कि- पशु मैथुन के समय कूजन या मधुर ध्वनि करते हैं। मनुष्य ने अब इस प्रकार की ध्वनि का अनुकरण आरंभ किया, तो संगीत की उद्भव हुआ।[9]

वैज्ञानिक विचारधारा

इस विचारधारा में संगीत उत्पत्ति के वैज्ञानिक सिद्धान्तों की व्याख्या की जाती है। दूसरे शब्दों में, संगीतोत्पत्ति के रहस्य को वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर समझा जा सकता है। वास्तव में, यदि संगीत पर वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया जाये तो यह ज्ञात होता है, कि संगीत के मूल में ध्वनि प्रथम है। ध्वनि की उत्पत्ति द्रव्यों में कम्पन के फलस्वरूप होती है। परन्तु यहाँ यह विचार करना आवश्यक है कि क्या कम्पन के फलस्वरूप उत्पन्न प्रत्येक प्रकार की ध्वनि या सभी ध्वनियाँ संगीत या संगीतोपयोगी है या नहीं। क्योंकि कम्पन के फलस्वरूप उत्पन्न प्रत्यके प्रकार ध्वनि हमें सुनने में सुखकर प्रतीत नहीं होती है, जबकि कुछ ध्वनियाँ कर्णप्रिय लगती हैं। जो ध्वनियाँ संगीतोपयोगी या कर्णप्रिय होती

है उनको संगीत ध्वनि या नाद कहते हैं एवं जो संगीतोपयोगी सिद्ध नहीं होती उन्हें 'शोर' या 'राव' कहते हैं। राव और नाद का भेद द्रव्य के कम्पन की प्रक्रिया में ही प्रत्यक्ष होता है। राव के उत्पादक कम्पन क्षणिक और अनियमित होते हैं और वह माध्यम को क्षणिक अविघात् से आंदोलित कर देते हैं। इसी कारण कान भी एक आकस्मिक अविघात् या धक्के का ही अनुभव करता है। इसके विपरीत नाद के उत्पादक का कम्पन नियमित और लगातार होता है। इसके माध्यम और कान के परदे में भी नियमित स्पंदन पैदा होता है।10 मनुष्य के गले या सामान्यतः सभी जीवों के गले से दोनों प्रकार की ध्वनियाँ निकलती है।

पाश्चात्य विचारधारा

पाश्चात्य विद्वान फ्रायड के मतानुसार- संगीत की उत्पत्ति शिशु के समान मनोवैविज्ञान के आधार पर हुई है। जिस प्रकार बालक रोना, चिल्लाना, हँसना आदि क्रियायें मनोविज्ञान की आवश्यकतानुसार स्वयं सीख जाते हैं, इसी प्रकार उसके अंदर संगीत स्वतः उत्पन्न होता है। कार्लस्टम्फ की यह धारणा है कि मानव ने जब ध्वनि के द्वारा संकेत करना आरंभ किया, तब भाषा का प्रादुर्भाव हुआ। जब वह ऊँची आवाज़ से चिल्लाता है तो वह एक विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के लिए ठहरता है। विशेष ध्वनि पर कुछ क्षण के ठहरने से एक विशेष तारता (च्पजबी) उत्पन्न होती है, इसी ने स्वर का रूप ग्रहण कर लिया। इनके मत से भाषा संगीत का ही पूर्ण रूप है।11 जेम्सलैंग द्वारा प्रभावित समूह का मानना है कि सर्वप्रथम मनुष्य ने चलना सीखा और उसके पश्चात् शनैः-शनैः क्रियाशील हो जाने पर संगीत स्वतः उत्पन्न हुआ। संगीत उत्पत्ति के संबंध में विकासवादी विचारधारा का मानना है कि सृष्टि के विकास के साथ संगीत का विकास हुआ। कुछ विद्वानों का मानना है कि नृत्य तथा वाद्य के सदृश्य कण्ठ संगीत की प्रेरणा आदिमानव को प्रकृति से उपलब्ध हुई। मानव कण्ठ स्वयं एक वाद्य है जो स्वर की सूक्ष्मताओं को आत्मसात् करने की क्षमता रखता है। प्रकृति के निरंतर स्रोत से ऐसी शारीरिक (कण्ठ) वीणा का विकास हो गया, और इसी के अनुकरण तथा प्रयास से संगीत का विकास हुआ। संगीत पूर्णरूपेण मानव निर्मित कला है। मानव की तीव्रानुभूतियों की अभिव्यक्ति इसकी जननि रही है। मानव मन के विकास के साथ ही संगीत कला का भी विकास हुआ। संगीत की उत्पत्ति एवं विकास संबंधी विविध विचारधाराओं से स्पष्ट होता है कि इसका विकास कैसे हुआ। इस संबंध में अभी तक न तो मतैक्य संभव हो सका है और न ही इस संबंध में पर्याप्त तथ्यात्मक प्रमाण हैं, जिनसे प्रमाणिक एवं विश्वासपूर्ण ढंग से यह कहा जा सके कि संगीत की उत्पत्ति का मुख्य कारण यही है। हाँ, इस संबंध में विभिन्न विचारधारायें अवश्य प्रचलित हैं, जिन्हें संगीतोत्पत्ति का प्रमाणिक तथ्य भले ही न मानें, परन्तु इनसे भारतीय संगीत की ऐतिहासिकता एवं प्राचीनता अवश्य ही सिद्ध हो जाती है।

संदर्भ सूची

1 शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, पृ.1/21
2 डॉ.जोगिन्द्र सिंह, भारतीय संगीत उत्पत्ति एव विकास, पृ. 01
3 डॉ.जोगिन्द्र सिंह, भारतीय संगीत उत्पत्ति एव विकास, पृ. 01
4 बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, नाट्यशास्त्र, पृ.1/19
5 डॉ.पूनम मिश्रा, प्राचीन भारत में संगीत, पृ. 04
6 लालमणी मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, पृ.26 7 लालमणी मिश्र, भारतीय संगीत वाद्य, पृ.24
8 पं.चतुर दामोदर, संगीत दर्पणम्, पृ.170-171
9 डॉ.जयदेव सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.02
10 ललित किशोर सिंह, ध्वनि और संगीत, पृ. 14
11 ठाकुर जयदेव सिंह, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.02